Topic-3 । - यण् संधि

इको यणचि

इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये।

'यण्' विधीयमान है। अतः केवल अपना ही बोध कराता है, अपने सवर्णी यों का नहीं।

संहितायाम् विषये का अर्थ है अव्यवहित स्वरों में ही सन्धि होती है।

' संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥"

तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य।
सप्तमीनिर्देशेन विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य पूर्वस्य बोध्यम्॥

यह परिभाषा सूत्र है सप्तम्यन्त पद का उच्चारण कर जिस कार्य का विधान किया जाता है, वह कार्य व्यवधान रहित पूर्व के स्थान पर ही होता है।

स्थानेऽन्तरतमः ।

प्रसंगे सति सदृशतम आदेशः स्यात् ।

यह परिभाषा सूत्र है। षष्ठ्यन्त पद के प्रसंग में जो ~~आदेश~~ हो, उसे सदृशतम होना चाहिए । अर्थात् षष्ठी के स्थान पर वही आदेश होगा, जो उसके अत्यन्त सदृश होगा ।

~~शब्दों की सदृशता~~ चार प्रकार की होती है। स्थानकृत, अर्थकृत, प्रमाणकृत, गुणकृत अथवा फलकृत ।

जहाँ अनेक प्रकार की सदृशता प्राप्त हो वहाँ स्थानकृत सदृशता बलवती मानी जाती है।

' यत्रानेकसादृश्यं सम्भवति
तत्र स्थानत एवान्तर्यं बलीयः